फरवरी 2024

अंतरदेश

अंक 2

सरहदों के पार
हिंदी का संसार

जापान विशेषांक

अंक संपादक

वेदप्रकाश सिंह

अंतरदेश

सरहदों के पार हिंदी का संसार

जापान विशेषांक

फरवरी 2024

संपादक मंडल (अवैतनिक):

अडेलै हेनिश-टेम्बे, लाइप्त्सिग विश्वविद्यालय, जर्मनी, adele_hennig@gmx.de
आनंद वर्धन शर्मा, सोफ़िया विश्वविद्यालय, बल्गारिया, anandsharma_64@yahoo.co.in
एरिका करांति, तूरीन विश्वविद्यालय, इटली, erika.caranti@gmail.com
दिव्यराज अमिय, त्युबिंगन विश्वविद्यालय, जर्मनी और ज़्यूरिख विश्वविद्यालय स्विट्जरलैंड, divyaraj.amiya@uni-tuebingen.de
राम प्रसाद भट्ट, हैम्बर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी, ram.prasad.bhatt@uni-hamburg.de
ली यालान, बेइजींग फ़ॉरन स्टडीज़ युनिवर्सिटी, चीन , liyalan@bfsu.edu.cn
वेदप्रकाश सिंह, ओसाका विश्वविद्यालय, जापान, singh.ved.prakash.hmt@osaka-u.ac.jp
शिव कुमार सिंह, लिस्बन विश्वविद्यालय, पुर्तगाल, shivsingh@campus.ul.pt
हंसा दीप, यूनिवर्सिटी ऑफ़ टोरंटो, कैनेडा, hansa.deep@utoronto.ca

अंक संपादक:

वेदप्रकाश सिंह

स्थायी संपर्क पता:

नॉटनल, स्वत्वाधिकार © 2024
16/1454, इंदिरा नगर, लखनऊ- 226016, उत्तर प्रदेश, भारत
antardesh.patrika@gmail.com

अंतरदेश से जुड़े क़ानूनी विवाद लखनऊ उच्च न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में आएँगे। मौखिक और लिखित रचनाओं और कृतियों में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं, नॉटनल, संपादक और संपादक मंडल के नहीं।

विषय सूची

संपादकीय 6

वेदप्रकाश सिंह

अंतरदेश प्रोजेक्ट के जापान अंक के बारे में 8

दिव्यराज अमिय

क्या जापान पुरुष प्रधान समाज है ? 10

तोमिओ मिज़ोकामि

आधुनिक जापान: द्वितीय महायुद्ध से पहले और बाद 20

प्रो. हिदेआकी इशिदा

जापानी कवयित्रियाँ : कोमाची से तावारा माची 27

उनीता सच्चिदानंद

जापान के घरेलू काम 46

माओ ओनिशी

धरती का स्वर्ग: जापान 49

अनुराग शर्मा

हिरोशिमा यात्रा 57

कादम्बरी मेहरा

जापान के दो राज्यों: कुमामोतो और तोक्यो की यात्रा 66

सासाकी यूज़ूकी

जापान के दो राज्यों: तोक्यो और कागावा की यात्रा 68

मोएका ताकेदा

यादों में बसा तोक्यो का यह मंदिर 71

श्यामसुंदर पाण्डेय

'जय क्योतो - जय वाराणसी' 77

राकेश तिवारी

जापान क्यों? 93

आंद्रे पिंतु तैसैरा

भारत में जापान : अहिंसा, मैत्री, शिंतो व सिनकानसेन की जीवट दुनिया 97

छोटू राम मीणा

नोह थियेटर 113

जेस्सिका ब्योलमन

जापान में फिल्म संस्कृति 117

मासुगा सुजी

जापान के एनिमेशन और कार्टून 120

रीसा काईतो

बड़ा बातूनी है चाय का यह प्याला 123

डॉ. तृप्ति

जापान की प्राथमिक शिक्षा 129

मिज़ुकी कोजिमा

जापानी स्कूलों में अंतर-सांस्कृतिक समझ के प्रयास 134

मोहम्मद मोईनउद्दीन

ओसामू दाज़ाई और उनका उपन्यास "दौड़ो, मेलोस" 140

मिकु कोबायाशी

शीनकाई माकोतो 144

मात्सुमोतो कोदाई

कोउराकुएँ नामक एक बहुत सुंदर पार्क 146

हारुका हिगाशीहारा

हानामी: साकुरा फूलों की महकती दुनिया 147

डॉ. अर्चना पाण्डेय

मार्च, माँ और साकुरा 150

गीतांजलि श्री

जांको राखे साइयाँ 161

प्रेम रंजन अनिमेष

दो कविताएँ 183

उनीता सच्चिदानंद

हिरोशिमा 188

शचीन्द्र आर्य

जापान के बारे में कुछ विचार 190

एरिक गंत्सको

शिष्टाचार 192

शार्लोट्टे उनक्रिग

जापान और भारत के कपड़े रंगने के तरीकों में समानता 194

कट्रीन कुर्त्स

जापानी शाकाहारी भोजन 196

आओई याओ

जापान में मेरा अनुभव 199

रूपा सिंह

मुझे जापान बहुत अच्छा लगता है 202

जिग्नेश राजपुरोहित

त्रेता युग का 'राम राज्य' और मेरा जापान 203

विकास रंजन

जापान में वैलेंटाइन्स डे मनाने का अनूठा तरीका 207

मीनाक्षी गोयल नायर

क्योतो की कुछ विशेषताएँ 211

मिज़ुकी कोजिमा

जापान में चार ऋतुएँ 213

यूरी योशीदा

द्वितीय वर्ष, ओसाका विश्वविद्यालय

जापानी की भावना 215

हाना नोहारा

जापान का परिचय 218

चीज़ु शिंजो

जापान का संक्षिप्त इतिहास 221

डॉ. सुरेश ऋतुपर्ण

संपादकीय

वेदप्रकाश सिंह

भारत और जापान का संबंध सदियों पुराना है। 'अंतरदेश' पत्रिका का यह अंक उसी संबंध के स्नेह-सूत्र को और मजबूत करने का एक प्रयास है। हिंदी समाज जापान के बारे में हमेशा जानने के लिए उत्सुक रहता है। भारत में और उसके बाहर ऐसे अनेक प्रयास हुए हैं जिनसे हिंदी भाषी समाज को जापान के बारे में नया और अद्भुत ज्ञान मिलता रहा है। इसका यह अर्थ कतई नहीं है कि इस अंक में भी पाठक को कुछ नया और अद्भुत ज्ञान मिले! इस अंक के लेखक अधिकांशतः हिंदीतर भाषी हैं। उनकी मातृ भाषा हिंदी नहीं है। हिंदी भारत और इस अंक के हिंदीतर भाषिओं को जोड़ने वाली भाषा है। उनके लेखों और इस प्रयास को भी इसी रूप में देखना चाहिए। यही इस पत्रिका का मूल उद्देश्य भी है कि भारत के बाहर के हिंदीतर भाषिओं को एक मंच दिया जा सके।

यह 'अंतरदेश' पत्रिका का दूसरा अंक है। पत्रिका का दूसरा जापान पर होगा इसकी योजना भी अंतरदेश पत्रिका की योजना के साथ ही बन गई थी। पहला अंक पिछले साल जुलाई 2023 से वेबसाईट पर उपलब्ध है। अब 29 फरवरी 2024 से यह अंक आपके सामने है। इस अंक में कोशिश की गई है कि जापान से जुड़ीं ऐसे अनेक रोचक बातें हों जो 'अंतरदेश' के पाठकों को जापान के प्रति और जिज्ञासु

बनाए। साथ ही 'अंतरदेश' के पाठकों को अगले अंक के इंतज़ार के लिए उद्वेलित करे। इस पत्रिका का हर अंक इस प्रयास को सफलता पूर्वक करेगा।

'अंतरदेश' के जापान विशेषांक में न केवल हिंदी पढ़ना सीख रहे लगभग चौदह जापानी विद्यार्थियों के लेख हैं, बल्कि हिंदी के दो सम्मानित जापानी विद्वानों प्रोफेसर एमिरेट्स तोमिओ मिज़ोकामि जी और प्रोफेसर एमिरेट्स हिदेअकि इशीदा जी के विद्वतापूर्ण लेख भी इस अंक की उपलब्धि हैं। जापान में रह रहे भारतीय मित्रों ने भी इस पत्रिका में अपना योगदान दिया है। उनके लेख पढ़कर भी पाठकों को जापानी समाज की विशेषताएँ पढ़ने को मिलेंगी। कैनेडा में रहने वालीं प्रोफेसर हंसा दीप जी ने दो लेख उपलब्ध करवाए। एक लेख जापान यात्रा पर है तो दूसरा लेख हिरोशिमा के बारे में पाठकों को बताएगा। जर्मनी में हिंदी पढ़ रहे चार विद्यार्थियों ने अपनी रचनाएँ अंतरदेश के लिए भेजी हैं।

इस अंक में जापान से जुड़ीं सभी जिज्ञासाएँ संभवतः शांत न हों लेकिन भविष्य में हम लोग ऐसा प्रयास कभी दोबारा भी कर सकते हैं। अनेक मित्रों से इस अंक के लिए लिखने का आग्रह किया। उनमें अधिकतर मित्रों ने अपने वादे के अनुसार हमें कृपा पूर्वक अपने लेख उपलब्ध करवाए। कुछ मित्रों ने पूर्व प्रकाशित सामग्री के उपयोग की सम्मति प्रदान की। सभी के प्रति आभार। इस पत्रिका के संपादक मंडल और नॉटनल के प्रबंधक श्री नीलाभ श्रीवास्तव जी का भी आभार जिन्होंने इस पत्रिका को नॉटनल परिवार का हिस्सा बनाया है।